IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 8, March 2026
Impact Factor: 8.2

ledkyhu ifjn'; esa efgyk l'kfDrdj.k vkSj ySfxd lekurk

Mk- ljLorh jkBkSj
अतिथि विद्वान समाजशास्त्र
शास0 महाविद्यालय पिपरिया जिला–कबीरधाम (छ.ग.)

Mk- egkun f}onh
प्राध्यापक, समाजाशास्त्र
शास0 के.एन. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मऊगंज (म.प्र.)

'kks/k lkjka'k %&

सामाजिक संरचना के विभेदीकरण का आधार लैंगिक असमानता है यह बात सहज ही प्रकृति सत्य है। जिस पर टीका टिप्पणी और विभिन्न प्रकार के वैचारिक गठजोड़ का विभक्तीकरण नये–नये अप्रासंगिक व्याख्याओं को जन्म देता है। जन्म और मृत्यु प्रकृति के दो स्थाई पहलू हैं जिस पर जन्म एक ऐसा कारक है जिस पर वैज्ञानिक चिंतन असहाय नजर आता है। जन्म के साथ शरीरधारी को मिलने वाली क्षमता, प्रतिभा और अन्य शक्तियां स्त्री व पुरुष दोनों को समभाव से मिलती है परन्तु भैतिक एवं पर्यावरणीय वर्चस्ववाद में महिलाओं को दोयम दर्जे में चिन्हित करते हुए पुरुषों की श्रेष्ठता का इजहार करता है। यह व्यवस्था मूलतः सामाजीकरण में विभिन्न आयामों में पुरुषवादी चिंतन का एकाधिकार होना है कालखण्ड चाहे जो रहा हो हर दौर में पुरुषों द्वारा महिलाओं में अपना अधिकार जताने और महिलाओं को अपना कृपाकांक्षी बनाने का रहा है प्रस्तुत आलेख में समकालीन महिला सशक्तिकरण में लैंगिक विभेदीकरण के प्रभावों का अध्ययन किया गया है।

eq[; 'kCn %& Hkkjr] l'kfDrdj.k] ySfxd] lekurk] i;koj.kh;] opLookn] foHknhdj.k] vlekurk vkfn

iLrkouk %&

पुरुष प्रधान समाज में स्त्री, बेटी, पत्नी, माँ के रूप में पनाह पाए हुए हैं उसका अपना कोई अस्तित्व नहीं है। सदियों से वह अपने अस्तित्व को मिटाकर पुरुष की छत्रछाया में जीवन बिताने के लिए अभिशप्त हैं। उसकी स्वयं की कोई पहचान नहीं है। विवाह के पूर्व पिता एवं विवाह के पश्चात पति परमेश्वर ही उसका निर्णायक एवं भाग्यविधाता होता है। उसके जीवन जीने के तौर–तरीके, रहन–सहन, वेशभूषा, शिक्षा–दीक्षा इत्यादि सभी फैसले घर के पुरुषों द्वारा ही लिए जाते हैं। समाज में रूप–रंग, लिंग और जन्म के आधार पर स्त्री के साथ भेदभाव के बीज इस उर्वरक भूमि में कुछ इस तरह से रोप दिए हैं कि उससे पुरुष प्रधान समाज की मानसिकता को बदलना आज भी एक जटिल कार्य है। समाज को जड़ मानसिकता से मुक्त कराने में नारी संघर्षों कीएक लम्बी फेहरिस्त है। पुरुषवादी समाज में नारी को वस्तु समझकर खरीदा बेचा गया और आज की स्त्रियाँ बाजार में

DOI: 10.48175/IJARSCT-32192

ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 8, March 2026 Impact Factor: 8.2

बेची एवं खरीदी जा रही हैं। इस दुर्गम राहों से निकलने के लिये स्त्री को सशक्त बनना होगा और निर्भीक, साहसिक होते हुए अपने जीवन के संघर्ष, पीड़ा, शोषण के साथ–साथ, स्त्री अस्तित्व, स्त्री–अधिकार, स्वतंत्रता सम्मेलन के लिए लड़ना होगा।

भारत में महिला सशक्तिकरण और लैंगिक समानता का मार्ग संघर्ष, लचीलापन और आशा से भरा हुआ है। हालांकि लैंगिक असमानता को दूर करने में भारत ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं, लेकिन फिर भी भारत में गहराई से व्याप्त पितृसत्तात्मक सोच को समाप्त करने और महिला सशक्तिकरण एवं लैंगिक समानता प्राप्त करने की यात्रा जटिल बनी हुई है। यह लेख महिला सशक्तिकरण और भारत में लैंगिक समानता के बहुआयामी पहलुओं पर प्रकाश डालता है जिसमें भारत में महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम, अब तक हुई प्रगति, अभी भी मौजूद बाधाएं और लैंगिक रूप से समानता प्राप्त करने के लिए भारत सरकार द्वारा उठाए गए आवश्यक कदमों को भी शामिल किया गया है।

efgyk l'kfDrdj.k d lc/k e fopkjdk d vyx &vyx fpru gA माना जाता है कि महिला सशक्तिकरण महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और व्यक्तिगत स्तर पर सशक्त बनाने की प्रक्रिया है। इसका उद्देश्य महिलाओं को अपने जीवन के सभी पहलुओं पर नियंत्रण प्रदान करना और उन्हें पुरुषों के समान अवसर प्रदान करना। सशकितकरण से महिलाओं में आत्म–सम्मान की भावना को बढ़ावा देना। उनके अपने निर्णय लेने की क्षमता और अपने एवं दूसरों के लिए सामाजिक परिवर्तन को प्रभावित करने का उनका अधिकार शामिल है। इस तरह सशकितकरण महिलाओं को समय सापेक्ष मन चिंतन दृष्टि देती है जिससे उनके आत्मविश्वास में वृद्धि हो रही है।

efgyk l'kfDrdj.k d ?kVdk ij fopkj djr rk db fcUn mHkjdj vkr g ftue ie[k आत्म सम्मान में वृद्धि, अवसर और संसाधनों तक पहुंच, विकल्प चुनने और निर्णय लेने का अधिकार महिलओं में आत्मसम्मान की भावना होना ही उन्हें सशक्त बनाता है। लैंगिक समानता की महिलाओं में सशक्तीकरण का भाव बलवती होता है जिसका प्रभाव विकल्प और निर्णय विकल्प चुनने और निर्णय लेने का उनका अधिकार। अवसर और संसाधनों तक पहुंच– महिलाओं को शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य सेवा आदि आवश्यक अवसरों और संसाधनों तक पहुंच होनी चाहिए। स्व पथ पर नियंत्रण का अधिकार– महिलाओं को अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेने का अधिकार होना चाहिए, चाहे घर के अंदर हो या बाहर सभी का निर्णय स्वयं करे। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अधिक न्यायपूर्ण सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था बनाने के लिए सामाजिक परिवर्तन की दिशा को प्रभावित करने की उनकी क्षमता।

लैंगिक समानता की सहज स्वाभाविक व्याख्या करते हुए कहा गया है कि समय और समाज के बदलते मानकों ने महिला पुरुष के मध्य प्रवीणता की अनकही परिधि का नये दृष्टिकोण से परिभाषित करने को विवश किया है जिसकी परिणित लैंगिक समानता के रूप में स्वीकारी जाने लगी है। लैंगिक समानता कल्पनीय चिंतन नहीं बल्कि समय के बदलते मानक को नवीन चेतना देने का कारक है। लैंगिक समानता का अर्थ महिलाओं और पुरुषों, बालक–बालिकाओं को समान अधिकार उत्तरदायित्व और अवसर प्राप्त होता है। लैंगिक समानता का अर्थ यह नहीं है कि महिलाएँ और पुरुष एक ही तरह के हो जाएंगे; बल्कि इस बात पर जोर देता है कि पुरुषों और महिलाओं के अधिकार, जिम्मेदारियां और अवसर उनके लिंग पर निर्भर नहीं होंगे और इस प्रकार यह लैंगिक असमानता को दूर करने का प्रयास करता है। भारत में महिलाओं के लिए सबसे बड़ी चुनौती जन्म लेना है, कोख में खत्म होने से बच भी जाएं तो कई अध्ययन बताते हैं कि बेटियों को बेटों की अपेक्षा भोजन तक कम दिया जाता है।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/IJARSCT-32192

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 8, March 2026
Impact Factor: 8.2

महिलायें वैदिक रूप से पुरुषों के बराबर होती हैं। महिलाओं को पुरुषों से कम वेतन मिलना चाहिए क्योंकि वे कमजोर हैं, छोटी हैं। यह वक्तव्य वारसा यूरोपीय संसद में पोलैंड के एक सांसद ने दिया। यह हमें याद दिलाने के लिए काफी है कि महिला समानता का संघर्ष अभी बहुत देर तक चलेगा। यह कोरा मिथ है कि महिलाओं में जैविक रूप से भारी, कठोर काम करने की क्षमता नहीं होती।

1930 के उत्तरार्द्ध और 1960 के मध्य में अंतः सांस्कृतिक आंकड़ों में स्वीकार किया गया था कि पुरुष, महिलाओं को सौंपे जाने वाले कार्य करने में अक्षम है और स्त्रियां पुरुषों के कार्यों को नहीं कर सकती। कुछ समाजों में आज भी बुनाई, कताई और खाना बनाने जैसे घरेलू कार्य पुरुष करते हैं, वहीं मोतियों के लिये गोताखोरी करना, नाव चलाना और घर बनाने जैसा साहसिक और कठोर कार्य स्त्रियां करती हैं। आदिम समाज की यह व्यवस्था आधुनिक समाजों में नहीं और अगर अपवाद स्वरूप ऐसा हुआ भी, तो स्त्री की वह प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं हुई, जो पुरुषों को प्राप्त होती रही है।

महिला सशक्तिकरण और लैंगिक समानता की अवधारणाएं परस्पर संबंधित और एक–दूसरे से जुड़ी हुई हैं। लैंगिक समानता को बढ़ावा देना महिला सशक्तिकरण के लिए पहली और सबसे महत्वपूर्ण शर्त है। साथ ही लैंगिक समानता की प्राप्ति के लिये स्वाभाविक रूप में महिलाओं के सशक्तिकरण की आवश्यकता होती है।

21oh lnh dh uohu lx cuh &

प्राचीन मध्यकालीन समय में भारतीय समाज सदियों में देवियों की पूजा करता है– सरस्वती, दुर्गा, लक्ष्मी, काली आदि की पूरे देश में पूजा की जाती है। हालांकि वैदिक काल में ही पितृसत्तात्मक व्यवस्था प्रचलित है, जहां रीति–रिवाजों और परंपराओं में पुरुषों को अधिक मान्यता दी गई है।

भारतीय इतिहास में गार्गी, मैत्रेयी और सुलमा जैसी कई महिलाओं का उल्लेख मिलता है, जिनकी तर्क क्षमता सामान्य पुरुषों की तुलना में कहीं बेहतर थी। हमारे देश में दुर्गावती जैसी महिला शासिका भी हुई हैं। दूसरी ओर यह भी था कि प्राचीन काल से ही भेदभाव का सामना करने के कारण महिलाएं चुपचाप पीड़ित रही हैं।

सामाजिक–धार्मिक सुधार आंदोलन जो 19वीं शताब्दी में हुये भारत में महिला सशक्तिकरण और लैंगिक समानता के लिये संगठित प्रयासों की शुरूआत थी। राजा राममोहन राय, स्वामी दयानंद सरस्वती, ईश्वरचंद्र विद्यासागर द्वारा किए गए प्रयासों ने भारत में लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने में सहायता की।

20वीं सदी की शुरूआत में महिला संगठनों की स्थापना के साथ महिलाओं की मांग की परिधि का विस्तार होने लगा था। भारतीय महिला परिषद, भारतीय महिला संघ, अखिल भारतीय महिला सम्मेलन आदि महिला संगठनों ने भारत में लैंगिक असमानता का मुद्दा उठाया और अन्य के साथ–साथ महिलाओं के मताधिकार एवं उत्तराधिकार की मांग की।

गांधीजी ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की सामूहिक लामबंदी और भागीदारी पर विशेष जोर दिया। उन्होंने महिलाओं को राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ–साथ उनके सामाजिक एवं राजनीतिक अधिकारों के लिये भी लड़ने के लिए प्रोत्साहित किया।

हालांकि राष्ट्रीय आंदोलनों में महिलाओं की भागीदारी का उद्देश्य सीधे तौर पर पितृसत्तात्मक समाज पर सवाल उठाना नहीं था, लेकिन इसने भारत में लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने में सहायता की।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 8, March 2026
Impact Factor: 8.2

महिलाओं में आत्मविश्वास की भावना पैदा करना तथा उनको उनकी क्षमता का अहसास कराना। पुरानी परंपराओं और रीति–रिवाजों की बाधाओं को तोड़ना।

1970 के पश्चात् भारत में सशक्तिकरण और लैंगिक समानता आंदोलन में प्रमुख महिला संगठनों ने लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने की पहल की, वर्तमान समय में लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने पर नये सिरे से ध्यान केन्द्रित करते हुए सरकार ने भारत में कई महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम प्रारंभ किये हैं। उनकी स्थिति में हालांकि कुछ सुधार हुआ है लेकिन फिर भी भारत में महिलाओं के साथ भेदभाव होता है उन्हें समान अवसरों में वंचित किया जाता है।

yfxd vlekurk d vuly> rF; &

विरोधाभाषी रूप से हमारे भारतीय समाज में जहां महिला देवियों की पूजा की जाती है, वहीं महिलाओं के साथ भेदभाव भी होता है। उन्हें समान अवसरों से वंचित किया जाता है। सामान्य लैंगिक अंतर जेंडर गैप रिपोर्ट 2023 के अनुसार, लैंगिक समानता के मामले में भारत 146 देशों में से 127वें स्थान पर है। राष्ट्रीय परिवार स्वाथ्य सर्वेक्षण 2019–21 के अनुसार भारत में लिंग अनुपात 1000 पुरुषों पर 1020 महिलाएं हैं, शिक्षा NFHS 2019–21 अनुसार पुरुषों के लिये लगभग 84.7 प्रतिशत की तुलना में महिलाओं में साक्षरता दर 70.3 प्रतिशत है। भारत में लिंगों के बीच वेतन अंतर विश्व में सबसे अधिक है। ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट 2021 के अनुसार औसतन भारतीय महिलाओं को पुरुषों की आय का 21 प्रतिशत भुगतान किया जाता है। संसद सदस्यों की कुल संख्या का केवल 14.94 प्रतिशत ही महिलाएँ हैं। दिसंबर 2023 तक राज्य विधानसभाओं में महिला प्रतिनिधित्व का औसत केवल 13.9 प्रतिशत है।

समकालीन वैश्विक परिदृश्य महिलावादी आंदोलनों के बाद नये युग में प्रवेश करता है। यूरोपीय देशों की महिलाओं ने पहलीबार पुरुषों द्वारा बनाई गई मिथक के समानान्तर लैंगिक समानता को प्रखरता के साथ खुले मंच पर लाई जिसके तहत वेश–बूसा, परिधान, खान–पान, शारीरिक सौष्ठव प्रदर्शन अंतरंग प्रदर्शन में खुलापन आदि का प्रयोग बेहिचक प्रारंभ कर सार्वजनिक मंचों में अभिव्यक्ति तथा कार्यालीयन कार्यों में बराबर की साझेदारी तथा वैवाहिक श्रृंखला को बराबरी में परिमार्जित करने के साथ ही विवाह विच्छेद और नये विवाह ऐसे कारक रहे जहां महिलाएं हर मुकाम पर मुंहतोड़ जवाब देने की मुहीम शुरू की। इसी के अगले चरण में नारी अधिकार बोध और लैंगिक समानता के पथधरता के संकेत अरब देशों में दिखा जब महिलाओं ने बुरका के खिलाफ क्रांतिकारी कदम उठाया साथ ही शिक्षा, सेवा आदि क्षेत्रों में भी पुरुषों के बराबर भागीदारी का शंखनाद किया। विश्व मंच के बदलाव का यह प्रभाव भारत में भी किसी न किसी रूप में प्रभावी होता गया पर भारतीय महिलाओं ने अपनी पुरातन मान्यताओं और संस्कृति के मध्य सामंजस्य बनाते हुए सशक्तिकरण के नवीन पथ पर अग्रसर हुई। वर्तमान भारत में महिलाएं उच्च पदों पर तथा सेवा क्षेत्र में अपनी प्रतिभा और शक्ति सामर्थ्य का परिचय दे रही हैं सैन्य जैसे क्षेत्रों महिलाएं उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों में भी देश की प्रतिष्ठा के लिए अपने को दांव में लगाने में निःसंकोच भाव से आगे आ रही हैं–

महिला सशक्तिकरण और लैंगिक समनता के केन्द्रीय अध्ययन के लिए मध्य प्रदेश के रीवा जिले की शहरी क्षेत्र की महिलाओं को अध्ययन के लिए समंकों के रूप में चयन किया गया है। रीवा नगर विकासशील नगरों में से है लगभग चार सौ वर्षों तक बघेलवंशीय राजाओं की रियासत की राजधानी के रूप में इतिहास में अंकित यह नगर स्वतंत्रता पश्चात विन्ध्य प्रदेश की राजधानी होने का गौरव हासिल किया। नगर में विश्वविद्यालय, अभियांत्रिकी महाविद्यालय, चिकित्सा महाविद्यालय, कृषि

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 8, March 2026
Impact Factor: 8.2

महाविद्यालय, औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था के अलावा रेलवे जंक्शन तथा हावाई जहाजों का संचालन देश के अनेकों नगरों से सीधी सेवाएं उपलब्ध हैं। इसके अलावा यहां पर सीमेन्ट उद्योग के कई औद्योगिक इकाईयां संचालित हैं जो देश की तरक्की में अपनी भूमिका निभा रही हैं। इसके साथ ही पावर जनरेशन के क्षेत्र में यहां पर एशिया का सबसे उन्नत सोलर प्लान्ट स्थापित है एवं जल विद्युत इकाइयां बाणसागर बांध के कारण स्थानीय नहरों के माध्यम से जल विद्युत का उत्पादन केन्द्र स्थापित है जिससे स्थानीय एवं देश अन्य नगरीय क्षेत्रों में विद्युत का प्रदान की जाती है।

अध्ययन क्षेत्र के महिलाओं में सशक्तिकरण और लैंगिक समानता के संबंध में अध्ययन क्षेत्र से चयनित 60 न्यादर्शों के माध्यम से वास्तविक स्थिति का आंकलन प्राथमिक स्रोतों के आधार पर किया गया है जो सशक्तिकरण के आयाम – का सृजन करती है। इन आयामों में कुछ आग्रांकित है–

lkekftd lkLdfr l'kfDrdj.k& महिलाआं को सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ में अपने विचारों को व्यक्त करने, निर्णय लेने और उन्हें लागू करने की क्षमता प्रदान करता है। प्राथमिक स्रोतों से लैंगिक समानता से सामाजिक सशक्तिकरण पर उत्तरदाताओं से प्राप्त अभिमत निम्न तालिका में प्रदर्शित है –

तालिका क्रमांक 1

लैंगिक समानता से सामाजिक सशक्तिकरण पर अभिमत

क्रमॉक	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	सामाजिक सशक्तिकरण हुआ	42	70.00
2.	सामाजिक सशक्तिकरण आंशिक हुआ	13	21.67
3.	सामाजिक सशक्तिकरण नहीं हुआ	5	8.33
	योग	60	100.00

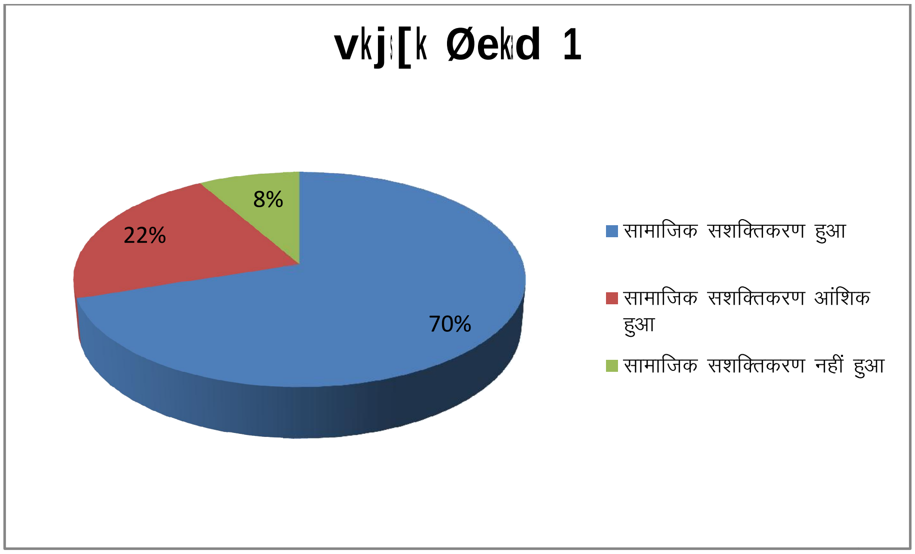

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 8, March 2026
Impact Factor: 8.2

उक्त तालिका से ज्ञात होता है कि लैंगिक समानता से सामाजिक सशक्तिकरण पर अभिमत का विवेचन किया गया है कि जिससे स्पष्ट होता है कि 70.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि सामाजिक सशक्तिकरण हुआ है, 21.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि सामाजिक सशक्तिकरण आंशिक हुआ है जबकि 8.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि सामाजिक सशक्तिकरण नहीं हुआ है।

jktuhfrd I'kfDrdj.k& राजनीतिक प्रक्रियाओं में भाग लेने, सार्वजनिक नीति एवं निर्णय लेने को प्रभावित करने तथा सभी स्तरों पर राजनीतिक एवं शासन संरचनाओं में प्रतिनिधित्व प्राप्त करने की महिलाओं की क्षमता को बढ़ाना है। प्राथमिक स्रोतों से लैंगिक समानता से राजनीतिक सशक्तिकरण पर उत्तरदाताओं से प्राप्त अभिमत निम्न तालिका में प्रदर्शित है –

तालिका क्रमांक 2

लैंगिक समानता से राजनैतिक सशक्तिकरण पर अभिमत

क्रमॉक	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	राजनैतिक सशक्तिकरण हुआ	36	60.00
2.	राजनैतिक सशक्तिकरण आंशिक हुआ	18	30.00
3.	राजनैतिक सशक्तिकरण नहीं हुआ	6	10.00
	योग	60	100.00

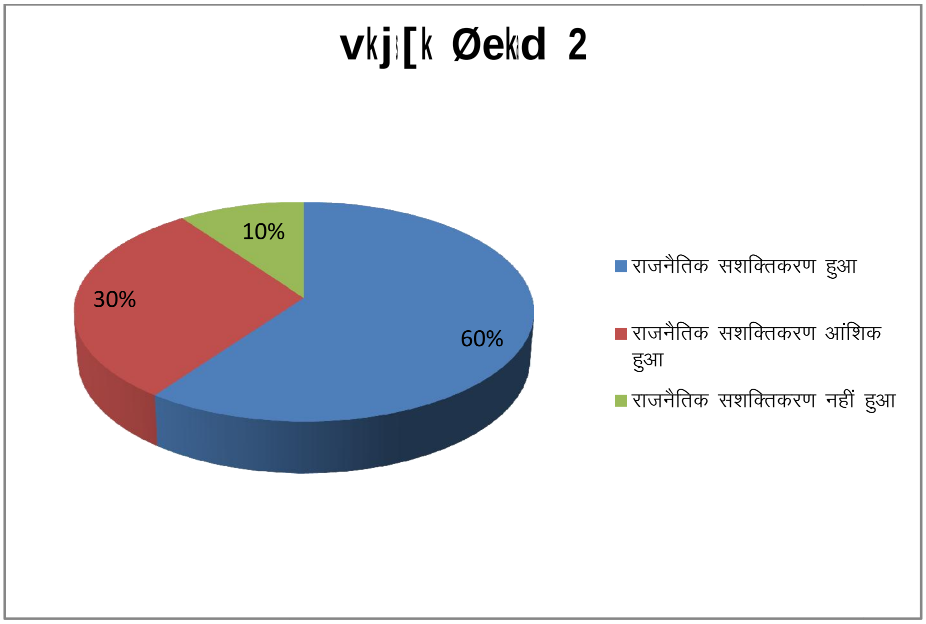

उक्त तालिका से ज्ञात होता है कि लैंगिक समानता से राजनैतिक सशक्तिकरण पर अभिमत का विवेचन किया गया है कि जिससे स्पष्ट होता है कि 60.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि राजनैतिक सशक्तिकरण हुआ है, 30.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि राजनैतिक सशक्तिकरण आंशिक हुआ है जबकि 10.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि राजनैतिक सशक्तिकरण नहीं हुआ है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 8, March 2026 Impact Factor: 8.2

vkfFkd I'kfDrdj.k& महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वतंत्र और मजबूत बनाने के साथ–साथ अर्थव्यवस्था में पूर्ण एवं स्वतंत्र रूप से भाग लेने में सक्षम बनाता है। प्राथमिक स्रोतों से लैंगिक समानता से आर्थिक सशक्तिकरण पर उत्तरदाताओं से प्राप्त अभिमत निम्न तालिका में प्रदर्शित है –

तालिका क्रमांक 3

लैंगिक समानता से आर्थिक सशक्तिकरण पर अभिमत

क्रमॉक	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	आर्थिक सशक्तिकरण हुआ	39	65.00
2.	आर्थिक सशक्तिकरण आंशिक हुआ	17	28.33
3.	आर्थिक सशक्तिकरण नहीं हुआ	4	6.67
	योग	60	100.00

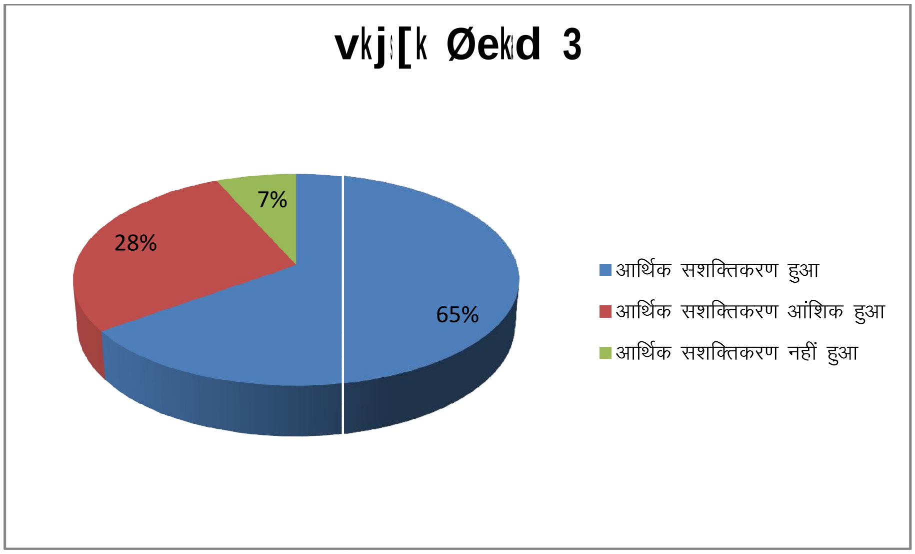

उक्त तालिका से ज्ञात होता है कि लैंगिक समानता से आर्थिक सशक्तिकरण पर अभिमत का विवेचन किया गया है कि जिससे स्पष्ट होता है कि 65.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि आर्थिक सशक्तिकरण हुआ है, 28.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि आर्थिक सशक्तिकरण आंशिक हुआ है जबकि 6.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि आर्थिक सशक्तिकरण नहीं हुआ है।

yfxd lekurk vkj efgyk I'kfDrdj.k dk egRo &

- **lkekftd U;k;&** लैंगिक समानता को संयुक्त राष्ट्र द्वारा मौलिक मानव अधिकार के रूप में मान्यता दी गई है। ऐसे में वास्तविक महिला सशक्तिकरण और लैंगिक समानता प्राप्त करने से सामाजिक न्याय को बढ़ावा मिलेगा।
- **n'k dh ixfr&** भारत की जनसंख्या में 50 प्रतिशत महिलाएँ हैं। ''विकसित भारत 2047'' बनाना है तो महिलाओं के योगदान के बिना संभव नहीं है।

IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 8, March 2026 Impact Factor: 8.2

- **lkekftd ifjorlu&** महिलाएँ पुरुषों की तुलना में बेहतर चुनाव करने और अपनी आय का अधिक हिस्सा अपने परिवारों और समाजों में निवेश करने की प्रवृत्ति रखती है। हमारे समाज में सकारात्मक परिवर्तन की संभावना बढ़ जाती है।
- **f'k{kk dk c<kok nuk &** शिक्षित लड़कियों के विवाह देर से करने और स्वस्थ बच्चे देर से पैदा करने और बच्चों को स्कूल भेजने की अधिक संभावना होती है इसलिए शिक्षा और महिला सशक्तिकरण का एक गहरा संबंध है। पढ़ी–लिखी महिलाएँ अपने अधिकार और हक के लिए लड़ाई लड़ने में सक्षम हैं।
- **'kkfri.k lekt &** लैंगिक समानता और सशक्त महिलाओं वाले समाजों में लिंग आधारित हिंसा कम देखी जाती है जिसमें यौन उत्पीड़न, घरेलू हिंसा, महिलाओं को दबाकर रखना, पुरुषों से कम आंकना आदि शामिल है।
- **fodkl &** लैंगिक समानता और समग्र विकास एवं बढ़ती आर्थिक समृद्धि के बची एक मजबूत संबंध पाया गया है।
- **dk;cy Hkkxhnkjh &** महिलाओं को समान रोजगार और समान वेतन देना कार्यस्थल में लैंगिक समानता को बढ़ावा देता है।
- **uokpkj dk ikRlkgu &** लैंगिक समानता विविध दृष्टिकोण और प्रतिभाओं को बढ़ावा प्रदान करती है जिससे अधिक नवाचार और बेहतर समाधान मिलते हैं।
- **cgrj fu.k; yuk &** लैंगिक समानता के द्वारा राजनीतिक क्षेत्र में यह सुनिश्चित किया जाता है कि नीति निर्माण प्रक्रिया में महिलाओं के दृष्टिकोण और जरूरतों का प्रतिनिधित्व किया जा रहा है या नहीं। लैंगिक समानता में सभी नागरिकों को लाभ पहुंचाने वाले अधिक समावेशी और प्रभावी शासन का प्रबंधन किया जाता है।

yfxd lekurk dk mik; %&

भारत में लैंगिक असमानता के लगातार बने रहने का मतलब है कि लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण प्राप्त करने के लिए एक व्यापक, बहुआयामी रणनीति की आवश्यकता है जो कई आयामों को कवर करती है।

- **lkekftd nf"Vdk.k e ifjorlu &** इस तथ्य पर विचार करने की जरूरत है कि इतने सारे कानून होने के बावजूद समस्या बनी हुई है, यह स्पष्ट करता है कि सामाजिक समस्या का समाधान केवल कानून के माध्यम से नहीं किया जा सकता जो आवश्यक है वह एक निरंतर अभियान है जो सामाजिक दृष्टिकोण में परिवर्तन है और सोच में परिवर्तन है जब तक लोगों की सोच नहीं बदलती तब तक समस्या का समाधान नहीं हो सकता।
- **efgykvk dh lj{kk lfuf'pr djuk &** मौजूदा कानूनों का प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए कुशल प्रभावी न्यायिक प्रणाली और कानून प्रवर्तन में महिलाओं के खिलाफ होने वाली लिंग आधारित हिंसा को कम करने में मदद मिलेगी।
- **cgrj f'k{kk &** शिक्षा और महिला सशक्तिकरण का एक मजबूत संबंध है इसलिए शिक्षा तक पहुंच को सक्षम बनाना महिलाओं को सशक्त बनाने का सबसे अच्छा साधन है। यह भारत में महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने और उनमें स्वयं के निर्णय लेने एवं निर्माण करने के लिए पर्याप्त आत्मविश्वास पैदा करने के लिए आवश्यक है। शिक्षा से सभी महिलाओं को सशक्त बनाया जा सकता है जिससे वे अपने अधिकार के प्रति जागरूक हों।

IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 8, March 2026 Impact Factor: 8.2

- **dk'ky fodkl &** महिलाओं को बाजार से संबंधित कौशल प्रदान करने में उन्हें श्रम बल बढ़ाने के लिए सक्षम बनाया जा सकता है। यह उन्हें आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाएगा और आर्थिक रूप से निर्भरता को कम करने में मदद करेगा।
- **usrRo fodkl &** महिलाओं को राजनीति की भूमिकाओं में बढ़ावा देने के लिये नेतृत्व विकास कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए। यह भारत में लैंगिक अपमानता को दूर करने और महिलाओं की स्थिति में सुधार करने में एक लंबा मार्ग तय करेगा और उनमें नेतृत्व क्षमता का विकास होगा और महिलाएँ भी नेतृत्व में बराबरी की हिस्सेदारी निभाएंगी।
- **jktuhfrd Hkkxhnkjh dk c<kok nuk &** राजनीतिक भागीदारी महिलाओं को आगे लाने में अहम भूमिका निभाता है इसमें महिलाओं की नेतृत्व की भूमिकाओं में बढ़ावा मिलता है।

भारत में महिला सशक्तिकरण और लैंगिक समानता केवल अपने आप में लक्ष्य नहीं है, बल्कि देश के समग्र विकास और समृद्धि के लिए मौलिक हैं। जैसे–जैसे भारत अपने ''विकसित भारत@2047'' के दृष्टिकोण की ओर बढ़ रहा है। सरकार, सिविल सोसायटी, समुदायों और व्यक्तियों को अपने सामूहिक प्रयासों को एक ऐसे समाज को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है।

महिला सशक्तिकरण का उद्देश्य महिलाओं में आत्मसम्मान की भावना को बढ़ावा देना है ताकि उन्हें अपनी पसंद स्वयं निर्धारित करने में सक्षम बनाया जा सके। अपनी सामाजिक– आर्थिक स्थितियों से उत्पन्न बाधाओं के बावजूद, भारत की महिलाएं अपने अधिकारों की लड़ाई के लिए सामूहिक रूप से लड़ती रही हैं।

fu"d"k

समाज के नवजागरण और समृद्ध पथ पर गतिमान होने के नये मानक की सहभागी महिलाएं बनी हैं, जिसका श्रीगणेश स्थानीय निकायों में महिलाओं के 50 प्रतिशत आरक्षण से हुई है। महिलाएं अब पुरुष के समान सक्ष्म ओर सामर्थ्य हो रही हैं उनके मन का उत्साह और चिंतन जनित आवेग ने उन्हें पारंपरिक परिधि से बाहर आने का मार्ग प्रशस्त किया है। कभी बालिकाएं गुड्डी–गुड्डे का खेल खेलती थीं। चूल्हा – चौका सजाती, सवारती थीं, अपने को उपलब्ध प्रसाधन से ज्योर्तिमय बनाती थी। पर अब समय बदल रहा है बालिकाएं अब विभिन्न क्षेत्रों में पीठ पर बैग लादे अग्रसर हैं अब चूल्हा चौका की जगह होटल एवं रेस्टोरेन्ट से खाद्य सामग्री तत्काल आर्डर के द्वारा घरों तक पहुंच जाती हैं। उत्सव और आयोजनों के लिए ब्यूटी–पारर्लर और वाशिंग सोप आदि इस प्रकार विभिन्न क्षेत्रों में लैंगिक समानता महिला – पुरुष में एक ही धरातल पर दिखने लगी है और समाज नव संस्कृति की ओर अग्रसर है बदलव का यह क्षण असुविधाजनक लगता है पर आने वाले समय में पुरुष और महिला एक सिक्के के दो पहलू समकक्ष और समर्थवान होकर के देश के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक विकास के नये सोपान अभिरंजित करेंगे।

lnHk lkr &

- शर्मा रितू, ''महिला सशक्तिकरण के नये आयाम'', रावत पब्लिकेशन नई दिल्ली, 2016
- आर्य राकेश कुमार, ''महिला सशक्तिकरण और भारत'', डायमंड बुक्स, नई दिल्ली, 2020
- यादव, वीरेन्द्र सिंह, ''21वीं सदी का महिला सशक्तिकरण'' : मिथक एवं यथार्थ, ओमेग पब्लिकेशन, 2010
- अग्रवाल, प्रमोद कुमार, ''भारत में स्थानीय निकाय में महिला नेतृतव, : ज्ञान गंगा नई दिल्ली, 2018

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 8, March 2026
Impact Factor: 8.2

- व्यास, आशा, ''पंचायती राज में महिला सहभागिता'', पोइंटर पब्लिकेशन जयपुर, 2012
- रस्तौगी नीरू, ''महिला सशक्तिकरण में आर्थिक स्वावलंबन व शिक्षा की भूमिका'', कर्णवती पब्लिकेशन अहमदाबाद, 2017
- Ministry of Finance. 2023. Sukanya Samriddhi Yojana : rules and Updates. Government of India Publication Division.
- National Commission for Women (NCW). 2020. Women in India : Progress and Challenges. NCW Annual Report.
- रहमानी, सबीहा, भारतीय मुस्लिम महिलाएँ एवं सशक्तिकरण, अध्ययन पब्लिकेशर्स, नई दिल्ली, 2016
- शर्मा, सवालिया बिहारी, महिला जागृति और सशक्तिकरण, अविष्कार पब्लिशर्स जयपुर, 2014